108

इकाई 2 - [illegible] भाषा की विकास यात्रा में अभिलेखों का महत्व/स्थान

(ख) अशोक का चतुर्दश शिलालेख (गिरनार)

अशोक का एक स्तम्भ लेख

सम्राट खारवेल का हाथी गुम्फा शिलालेख

इकाई 3 - सामूहिक परिचर्चा (विषय और कार्यक्रम विभागाध्यक्षानुसार)

प्रश्न: अशोक के एक से सप्तम स्तम्भ लेख का सारांश लिखें।

उत्तर: भारत के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की दृष्टि से प्राचीन भारतीय अभिलेखों का विशेष महत्व है। इनमें से सम्राट अशोक के अभिलेखों एवम् स्तम्भलेखों का स्थान सर्वोपरि है। इन्हीं अभिलेखों एवम् स्तम्भलेखों के आधार पर ही सम्राट अशोक का नाम विश्व के महान् आदर्श सम्राटों में अग्रगण्य माना जाता है।

मौर्य सम्राट अशोक ने अपने धर्मप्रचार के लिए जो पाषाण स्तम्भ बनवाया था तथा जिस पर अभिलेख उत्कीर्ण करवाये थे, उन्हें स्तम्भलेख के नाम से जाना जाता है। इन स्तम्भलेखों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है - पहला सप्त-स्तम्भ और दूसरा लघु स्तम्भलेख। इनमें से सप्तस्तम्भ लेख इस प्रकार हैं: (1) दिल्ली-टोपरा स्तम्भ (2) दिल्ली-मेरठ स्तम्भ (3) इलाहाबाद-कौशाम्बी स्तम्भ (4) लौरिया-अरेराज स्तम्भ (5) लौरिया-नन्दगढ़ स्तम्भ (6) रामपुरवा स्तम्भ एवम् (7) सातवाँ स्तम्भलेख दिल्ली-टोपरा स्तम्भलेख।

उपर्युक्त ये सात अभिलेख सप्त स्तम्भ लेख के नाम से सुप्रसिद्ध हैं।

सप्तस्तम्भलेख का सारांश:

सम्राट अशोक ने सात स्तम्भ लेखों पर, जो प्रकाश डाला है, उसका सार संक्षिप्त क्रमशः निम्नवत् है:—

प्रथम स्तम्भलेख:

सम्राट अशोक ने अपने शासन-व्यवस्था के छब्बीस वर्षों बाद यह धर्मलिपि युक्त प्रथम स्तम्भ लेख लिखवाया। इसके माध्यम से उन्होंने बतलाया कि उच्चतम धर्मानुराग, उत्तम आत्म-परीक्षा, सेवा, शुश्रूषा, उच्चतम भय और उच्चतम उत्साह का पालन करना ही उत्तम धर्म है जिसके बिना इहलौकिक एवं पारलौकिक उद्देश्य की प्राप्ति संभव नहीं है।

NOTES

Scanned with OKEN Scanner

इसलिए राजकर्मचारी भी धर्मानुसार आचरण करते हैं और प्रजाजनों से भी धर्माचरण करवाते हैं। उनका विश्वास है कि मेरे इस धर्मोपदेश से धर्म का आदर और धर्मानुराग निरन्तर वर्धित हुई है और आगे भी वर्धित होगी।

दूसरा स्तम्भलेख:

इस स्तम्भलेख में सम्राट अशोक ने धर्म की परिभाषा दी है और अपने कल्याणकारी कार्यों का उल्लेख किया है। उन्होंने बतलाया है कि 'धर्म उत्तम' है। धर्म क्या है? इस संबंध में उन्होंने कहा है कि "अपासिनवे बहुकयाने, दया, दाने, सचे सोचये" अर्थात अल्पपाप, बहुतकल्याण, दया करना, दानदेना, सत्य बोलना और पवित्र रहना ही धर्म है।

तीसरा स्तम्भलेख:

इस स्तम्भलेख में सम्राट अशोक ने आत्मानुशासन पर बल दिया है। उन्होंने बतलाया है कि मनुष्य अपने द्वारा किये गये अच्छे कामों को तो देखता है, पर अपने पापों को नहीं देखता है। परन्तु मनुष्य को इसतथ्य देखना चाहिए क्योंकि ये पाप की ओर ले जानेवाले हैं। जैसे- हिंसा, निर्दयता, क्रोध, अहंकार और ईर्ष्या। वस्तुतः अपने कार्यों का मूल्यांकन इस दृष्टि से करना चाहिए कि यह कार्य इस लोक और परलोक के लिए अच्छा है या नहीं।

चतुर्थ स्तम्भलेख:

इस स्तम्भलेख में एक ओर तो अशोक ने अपने रज्जुक (उच्चाधिकारी) के अधिकार एवम् कर्तव्य की चर्चा की है और अपनी आज्ञा को सर्वोपरि बतलाया है और कहा है कि रज्जुकों का प्रजा के साथ वैसा ही सम्बन्ध होना चाहिए जैसा धाय और शिशु के बीच होती है अर्थात उनका कर्तव्य जनता की सुख सुविधा का ध्यान रखना है। इस दृष्टि से सम्राट अशोक ने न्याय की प्रक्रिया और दण्ड के देने में भेद-भाव न करने की बात कही है।

दूसरी ओर सम्राट अशोक ने कैदियों के प्रति किये जानेवाले व्यवहार का उल्लेख किया है। इसके अनुसार बन्धन और मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों को अपनी सजा के प्रति पुनर्विचार ~~करने~~ करने का अनुरोध कर सकता था। दण्डित व्यक्ति के प्रति अशोक की सोच

दूसरी ओर सम्राट अशोक ने प्रजाजनों के लिए कल्याणकारी कार्य किया, उसकी भी इन्होंने इस लेख में चर्चा की। इन सार्वजनिक हित के कार्यों में इन्होंने सड़कों पर छायादार वृक्ष लगवाने, आधे-आधे कोस पर पानी पीने के लिए कुएं खुदवाने, पौशाला आदि स्थापित करने का उल्लेख किया है। किन्तु साथ ही यह भी स्वीकार किया है कि ये सभी कार्य उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं, जितना धर्म का अनुसरण करना है। अतः इस स्तम्भलेख में धर्म के नियमों का उल्लेख विशेष महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सम्राट अशोक ने धर्म के विशिष्ट गुणों का व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार पालन करना चाहिए, इसकी चर्चा बार-बार अपने अभिलेखों में किया है अतः सम्राट ने अपने स्तम्भलेखों में जिस धर्म का प्रचार किया है, वह सार्वभौमिक धर्म का सार कहा जा सकता है।

प्र० सम्राट अशोक के सप्त स्तम्भलेखों का परिचय दें।

Scanned with OKEN Scanner

रही है कि वे दान और उपवास अवश्य करें। इससे वे दुष्कृ की अवधि समाप्त हो जाने के बाद परलोक का लाभ पा सकेंगे और उनके इस आचरण का जनता पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।
इसप्रकार सम्राट अशोक ने इस स्तम्भ लेख में न्याय की प्रक्रिया सम दण्ड देने की प्रक्रिया को समता मूलक बनाये रखने का निर्देश दिया है।

पाँचवा स्तम्भलेख:

उस पँचम स्तम्भ लेख में मुख्यतः जीव हिंसा को नियंत्रित करने पर बल दिया गया है। उसमें विस्तार से बतलाया गया है कि कौन से जीव न मारे जाय और कब न मारें, कब न बेचे जाय और कब न दागे जाय। इस प्रकार इस शासन के द्वारा उसने जीव हिंसा को नियंत्रित किया है। अतः सम्राट अशोक की शासन व्यवस्था में इस स्तम्भ लेख के माध्यम से निर्देश दिया गया है कि जीव का जीव से पोषण नहीं करना चाहिए।

षष्ठ स्तम्भलेख:

इस षष्ठ स्तम्भ लेख में अशोक ने अपने धर्मलेख लिखाने के प्रयोजन को बतलाते हुए कहा है कि मैंने लोक के हित और सुख के लिए यह धर्मलिपि लिखवायी है। साथ ही राजा और प्रजा के बीच सम्बन्ध के विषय में अपने दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण किया है और बतलाया है कि सभी सम्प्रदाय के लोग मेरे लिए पूज्य हैं। मेरे मत में व्यक्ति का सम्मान ही प्रधान है।

सातवा स्तम्भलेख:

इस महत्वपूर्ण सातवें स्तम्भ लेख में सम्राट अशोक ने एक ओर यह बतलाने की चेष्टा की है कि उसके पूर्ववर्ती राजागण भी इस बात के लिए प्रयत्नशील थे कि धर्म की वृद्धि हो। परन्तु वे सभी इस कार्य में सफल न हो सके। इसलिए अशोक ने इस दिशा में स्वयं उत्साह दिखाया और धार्मिक घोषणाएं और धर्मानुशासन बरतने का निश्चय किया ताकि जनता उन्हें सुन-समझकर एवं सुनकर उसका आचरण करे। इसके लिए उन्होंने राजकर्मचारी और उच्चाधिकारी नियुक्त किये, धर्म स्थापित किये, धर्ममहामात्रों की नियुक्ति की तथा धर्म की घोषणा करायी।

NOTES